प्रातःक्लास 25/4/68 ओमशान्ति आत्मभिमानी हो?

ओमशान्ति। मीठे–2 रूहानी बच्चे यह तो समझ गये हैं; क्योंकि यहां समझने वाले ही आ सकते हैं। यहां कोई मनुष्य नहीं पढ़ाते हैं। यह तो भगवान पढ़ाते हैं। भगवानुवाचः भगवान की भी पहचान चाहिए। नाम तो कितना बड़ा है। भगवान। फिर कहते हैं नाम–रूप से न्यारा है। अभी है भी जैसे प्रैक्टिकल से न्यारा। इतनी छोटी बिन्दी है, जो मनुष्य समझ ही नहीं सकते। बाबा बैठ समझाते हैं तो बच्चे वण्डर खाते हैं। आत्मा भी छोटी बिन्दी है। कहते भी हैं आत्मा सितारा है। जैसे वह सितारे हैं, वह छोटे तो नहीं है। यह आत्मा (सितारा) तो सच्च–2 छोटी है। बाबा भी बिन्दी है। यह भी बच्चे समझते हैं। बाप तो सदा पवित्र है। उनकी महिमा भी है ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर। इसमें मूँझने की कोई बात नहीं। मुख्य बात है ही पावन बनने की। विकारों पर ही झगड़ा होता है। पावन बनने लिए पतित–पावन को बुलाते हैं तो ज़रूर पावन बनना पड़ेगा ना। इसमें भी मूँझने की बात नहीं। अबलाओं पर अत्याचार होते हैं। और सतसंगो में यह बातें नहीं होतीं। कहां भी हंगामा नहीं होता। यहां हंगामा खास इस बात पर ही होता है। और तो कोई गड़बड़ी नहीं। बाप पढ़ाते हैं, बाप कहते हैं मैं आता हूँ वानप्रस्थ अवस्था में। वानप्रस्थ अवस्था का कायदा भी यहां से शुरू होता है। बाप जब प्रवेश करते हैं तो वानप्रस्थ अवस्था में। तो वानप्रस्थ वाले ज़रूर वानप्रस्थ में ही रहेंगे। वाणी से परे जाने के लिए बाप को याद कर पूरा पवित्र बनना है। पवित्र बनने का रास्ता तो एक ही है। और कोई है नहीं। वापस जाना है तो पवित्र ज़रूर बनना है। जाना तो सभी को है। दो–चार तो नहीं जावेंगे। सारी पतित दुनियां को बदली होना है। इस ड्रामा का किसको भी पता नहीं है। सतयुग से कलियुग तक इस ड्रामा का चक्र है। सूक्ष्मवतन को तो बाबा उड़ा देते हैं। जो कुछ है नहीं। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है और पावन भी ज़रूर बनना है। तब ही तुम शान्तिधाम–सुखधाम जा सकेंगे। गायन भी है गति–सद्गति दाता एक ही है। सतयुग में बहुत ही थोड़े होते हैं और पवित्र रहते हैं। कलयुग में है अनेक धर्म और अपवित्र हो पड़े हैं। यह तो बहुत ही सहज बात है समझने की। बाप तो पहले से ही बता देते हैं। बाप तो जानते हैं हंगामा होगा। न जानते हो(तो) युक्तियां क्यों रचें कि ऐसे चिट्ठी ले आओ हम ज्ञान अमृत पीने जाते हैं। जानते हैं झगड़े तो होंगे ही। यह भी नूँध है। आश्चर्यवत् अच्छी रीत पहचानन्ति, पहचान कर ज्ञान भी लेते, औरों को भी ज्ञान देते फिर भी अहो माया। उन्हों तुम अपने तरफ खैंच लेती हो। यह नई बात नहीं। ड्रामा में नूँध है। जो कुछ होता है ड्रामा अनुसार होना ही है। इस भावी को कोई टाल नहीं सकते। मनुष्य सिर्फ़ अक्षर कह देते हैं; परन्तु अर्थ नहीं समझते। यह भी ड्रामा में नूँध है। यह बहुत ही ऊँची पढ़ाई है। छोटे–2 बच्चे आते हैं, बाबा कहते हैं यह कैसे पार जावेंगे? आँखें ऐसी धोखाबाज़ हैं बात मत पूछो। कोई सुन्दर स्त्री को देखा और लड्डू बन जाते हैं। तमोप्रधान दुनियां है ना। कॉलेजों–स्कूलों में तो बहुत ही खराब हो पड़ते हैं। विलायत में तो बात मत पूछो; इसलिए आजकल दवाईयां ऐसी निकालते हैं, विकार में जाते रहें, बच्चे पैदा न हो; क्योंकि अनाज आदि मिलता नहीं। तो दवाईयों पर काम चलाते हैं; परन्तु उससे तो शरीर की बहुत कमज़ोरी हो जाती है। और ही जास्ती। आयु भी कम हो जाती है। टेढ़े–बाके मनुष्य हो जाते हैं। सतयुग में ऐसी बातें होती ... नहीं। वहां तो आयु भी बड़ी रहती है। मनुष्यों को यह खयाल नहीं रहता भारत स्वर्ग़ था ना। वह कह देते सतयुग को लाखों वर्ष हुये। बाप समझाते हैं यह तो कल तुमको राज–भाग देकर गये, सभी कहां गंवा दिया? जैसे बाप बच्चों को कहते हैं इतनी मिलकीयत तुमको दी, कहां गंवाये दी? बहुत फर्स्ट क्लास धनवान होते हैं, बच्चे को विलायत भेजते, घूम–फिर चक्र लगाकर आओ, बच्चा गया, धक्क से सभी पैसे उड़ाकर ख़त्म कर देते। एक राजा का बच्चा था। गया विलायत। बस बच्चे को नशा चढ़ा पैसे का और राजाई का। बड़े–2 आदमियों को पार्टियां देने लग पड़ा। एक पार्टी में 40 हज़ार रुपया खर्चा किया। सच्चे सोने के फूल बनाये, सभी आने वाले पर उन

सोने फूलों की वर्सा की। बहुत ही धनवान का बच्चा था। 12 मास में करोड़ रुपया ख़त्म कर दिया। बाप ही अजब में पड़ गया। ऐसे–2 कपूत बच्चे निकल पड़ते हैं। बेहद का बाप भी कहते हैं मैं तुमको कितना धन देकर गया। कितना तुमको लायक विश्व का मालिक बनाकर गया। अभी ड्रामा अनुसार तुम्हारा क्या हाल हो गया है। तुम वही बच्चे हो ना। तुम कितने धनवान थे। यह है बेहद की बात। जो तुम समझाते हो। यह भी मिसाल है ना रोज़ कहते हैं शेर आया शेर आया; परन्तु शेर आता नहीं था। एक दिन सच्च शेर आ गया। तो तुम भी कहते हो मौत आया कि आया। तो कहते हैं यह तो रोज़ कहती है। विनाश होता नहीं। अभी तुम जानते हो एक दिन विनाश होना ज़रूर है। उसकी फिर कहानी बना दी है। बेहद का बाप कहते हैं उन्हों का तो दोष नहीं है। कल्प पहले भी हुआ था। 5000 वर्ष की बात है। बाबा ने बहुत ही बार बोला है। यह भी तुम लिखते रहो कि 5000 वर्ष पहले भी हूबहू ऐसा म्युज़ियम खोला था भारत में देवी–देवता धर्म की स्थापना करने। एकदम क्लीयर लिख देना चाहिए। तो आकर समझने की कोशिश करेंगे। बाप आया हुआ है। बाप की वर्सा है ही स्वर्ग़ की बादशाही। भारत स्वर्ग था ना। पहले नई–नई दुनियां में नय(ा) भारत था। हैविन था। हैविन सो हैल, हैल सो हैविन। यह बहुत बड़ा बेहद का ड्रामा है। इसमें सभी पार्टधारी हैं। 84 जन्मों का पार्ट बजाकर फिर अभी वापस जाते हैं। पहले हम मालिक थे। फिर कंगाल बने। फिर अभी बाप के मत पर चलकर मालिक बनते हैं। तुम जानते हो हम कल्प–2 श्रीमत पर भारत को स्वर्ग़ बनाते हैं। पावन भी ज़रूर बनना है। पावन बनने के कारण ही अत्याचार होते हैं। बच्चियां कितनी मार खाती है। नंगन कर बाहर निकाल देते हैं। जैसे सीढ़ी में दिखाया है। भिखारी भी तो बरोबर है। यह तो अखबार में भी पड़ा था। तुमको कोई कुछ कह न सके। तुम कहेंगे उस समय अखबार में जिसने डाला उनको कुछ कहा नहीं, हमने डाला तो ऐसे क्यों कहते हो? बाप समझाते तो बहुत हैं। फिर बाहर जाने से बेसमझ बन पड़ते हैं। आश्चर्यवत सुनन्ति, कथन्ति, ज्ञान देवन्ति फिर अहो मम माया, वैसे का वैसे बन जाते हैं। और ही बदतर। काम विकार में फंसे और गिरे। शिवबाबा इस वैश्यालय को आकर शिवालय बनाते हैं। तुम बच्चों को भी पुरुषार्थ करना है ना। इस विख के बात पर कितना हंगामा हुआ। बहुत डर गये। समझा कोई काल है। जादूगर है। यह तो बेहद का बाप बहुत ही मीठा है। अगर सभी को पता पड़ जाये तो ढेर के ढेर आ जायें। पढ़ाई चल न सके। पढ़ाई तो एकान्त में चाहिए ना। सुबह को कितने शांत रहते थे। हम अपन को आत्मा समझ बाप को याद करते हैं। याद के सिवाय विकर्म कैसे विनाश होंगे। यही फुर्ना लगा हुआ है। अभी पतित, कंगाल बन पड़े हैं। फिर पावन सिरताज कैसे बने। बाप तो बिल्कुल सहज बताते हैं। हंगामा तो होगा। डरने की कोई बात नहीं। बाप तो है बिल्कुल साधारण ना। ड्रेस आदि सभी वही है। कुछ भी फ़र्क नहीं। सन्यासी लोग तो फिर भी घर–बार छोड़ गेरू कफ़न लेते हैं। उनकी तो वही पहिरवाईस है। सिर्फ़ बाप ने प्रवेश किया है। और तो कोई फ़र्क नहीं। जैसे बाप बच्चों को प्यार से सम्भालते हैं, पालन–पोषण करते हैं वैसे भी यह भी करते हैं। कोई अंहकार की बात नहीं। बिल्कुल ही साधारण चलते हैं। बाकी रहने लिए मकान तो बनाना पड़े ना। वह भी साधारण है। कोई मारबुल आदि तो हनीं (नहीं)। नहीं तो बेहद का बाप पढ़ाते हैं कितना अच्छा होना चाहिए; परन्तु बाप तो साधारण तन में साधारण रीति पढ़ाते हैं। बच्चे–2 कह कितना प्यार से पढ़ाते हैं। बाप तो है चकमक। सभी को कशिश करते हैं; परन्तु इतना ज़ोर से खींचते नहीं हैं, नहीं तो तुम ठहर न सको। एकदम चटक पड़ो। चकमक कम है क्या? बच्चियां पवित्र बनती हैं तो बहुत सुख मिलता है। वह तो सिर्फ़ कह देते हैं शक्ति है; परन्तु शक्ति किसको कहा जाता है वह समझते नहीं। सर्वशक्तिवान है बाबा। वह सभी को ऐसा बनाते हैं; परन्तु सभी एक जैसे तो बन न सके। फिर तो फीचर्स भी ए(क) जैसा हो जाये। यह तो ड्रामा बना हुआ है। 84 जन्म में तुम(क)ो वही फीचर्स मिलनी है। जो कल्प पहले मिली थी

इसमें फ़र्क नहीं पड़ सकता। कितनी समझने और धारण करने की बातें हैं। विनाश भी ज़रूर होना ही है। लड़ाई शांत तो अभी हो न सके। आपस में लड़ते ही रहते हैं। मौत तो जैसे सिर पर खड़ा है। ड्रामा अनुसार एक आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना बाकी अनेक धर्मों की विनाश तो होना ही है। एटॉमिक बॉम्ब्स भी बनाते रहते हैं। नैचुरल कैलेमिटीज़ भी होंगी। बड़े–2 पत्थर गिरेंगे तो सभी के मकान टूट पड़ेंगे। कितना भी मज़बूत रीति मकान बनावें, फांउन्डेशन पक्का डालें ; परन्तु यह रहेंगे नहीं। वह समझते हैं अर्थक्वेक में भी गिर न सकेंगे; परन्तु बाप कहते हैं कितना भी करो। 100 मार(मंज़िल) बनाओ; परन्तु विनाश तो होना ही है। यह कुछ भी रहेंगे नहीं। सतयुग में यह थोड़े ही थे। तुम यहां आये हो स्वर्ग़ का वर्सा पाने। विलायत में देखो क्या लगा पड़ा है। उनको रावण का पॉम्प कहा जाता है। माया कहती है हम भी कम नहीं हैं। वहां तो तुम्हारे हीरों–जवाहरों के महल होते हैं। सोने की सभी चीज़ें। वहां तो दूसरा–तीसरा मंज़िल बनाने की दरकार नहीं। ज़मीन आदि का खर्चा थोड़े ही लगता है। सभी कुछ मौजूद रहता है। तो बच्चों को पुरुषार्थ करना चाहिए सभी को पैगाम पहुँचाना है। अच्छे–2 बच्चे पण्डा बन आते हैं रिफ्रेश होने लिए। यह भी ड्रामा में नूँध है। फिर भी आवेंगे। इतने सभी आये हैं। पता नहीं इन सभी को फिर देखूँगा या नहीं। आये तो ढेर के ढेर। फिर आश्चर्यवत भागन्ति हो गये। लिखते हैं बाबा हम गिर गये। अरे, की कमाई चट कर दी। फिर इतना ऊँच चढ़ न सके। यह है ही बड़ी ते बड़ी अवज्ञा। ऑर्डीनेन्स निकालते हैं ना फलाने टाइम पर कोई भी बाहर न निकले। नहीं तो शूट कर देंगे। बाप भी कहते हैं विकार में जावेंगे तो शूट हो जावेंगे। भगवान का हुकुम है ना। खबरदार रहना है। जबरदस्ती करते हैं तो फिर तो उन पर पाप चढ़ता है। आजकल तो ऐसी दवाईयां भी निकली हैं (जो) खिलाकर गन्दा कर देते हैं। गैस आदि की ऐसी–2 चीज़ें निकालते हैं जो मनुष्य बैठे–2 फट से खलास हो जाता। यह सभी ड्रामा में नूँध है; क्योंकि पिछाड़ी में हॉस्पिटल आदि थोड़े ही रहेंगे। झट आत्मा एक शरीर छोड़ कर जा दूसरा लेती है। कलेश आदि सभी छूट जाते हैं। आत्मा स्वतन्त्र है। जिस समय पर आयु पूरी होती है तो शरीर छोड़ देते हैं। वहां काल होता नहीं। रावण ही नहीं तो काल फिर कहां से आवेगा? यह रावण की दूत है ना। भगव(ान) के नहीं। भगवान (को तो) बच्चे ही प्यारे हैं। बाप कब बच्चों का दुःख सहन कर न सके। ड्रामा अनुसार पौना कल्प से भी जास्ती सुख पाते हो। इतना सुख बाप देते हैं तो उनकी श्रीमत पर चलना चाहिए ना। अंतिम जन्म है। बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र रहना है। बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगे। जन्म–जन्मांतर के पाप सिर पर हैं। तमोप्रधान से सतोप्रधान ज़रूर बनना है। बाप है सर्वशक्तिवान अथॉरिटी। जो सभी शास्त्र आदि पढ़ते हैं उनको अथॉरिटी कहते हैं। अभी बाप कहते (हैं) उन सभी का अथॉरिटी तो मैं हूँ। मैं इन ब्रह्मा द्वारा तुमको शास्त्रों को स(ा)र तंत सुनाता हूँ। अपन को आत्मा (समझ) मुझ बाप को याद करो। बाकी पानी में स्नान करने से पावन बन नहीं सकते। कहां चुल्लू पानी भी होगा तो उनको भी तीर्थ समझ झट वह पानी डाल देंगे। इसको कहा जाता है तमोप्रधान निश्चय जिस(से) दुगर्ति ही होती है। यह तुम्हारा है सतोप्रधान निश्चय। बाप समझाते हैं उनमें डरने की बात नहीं है। सिंध में समझते थे काल आया है। अखबारों में क्या डालते थे? झूठ माना झूठ। सच्च की रत्ती नहीं। ढेर के ढे(र) बच्चियां भाग आईं। उन्हों के लिए भी सभी प्रबन्ध रचना पड़े। बाबा इनमें प्रवेश होकर इनको स्वाहा न(हीं) करावे तो काम कैसे चले? कैसे सभी आये। बाबा ने सम्भाला ना। तुम सभी भाग कर बेहद के बाबा के पास आ गये। इसको ही चरित्र कहा जाता है। बेहद का बाप इनमें था। तो इतने सभी भाग आये। भट्ठी बननी थ(ी)। बाबा–म(म)मा आदि सभी झाड़ू आदि लगाते थे। मोटरें आदि साफ करते थे। करांची के तो जैसे मालिक बन गये। बड़े मिनिस्टर आदि समझते थे यह ख़ुदाई खिज़मतगार है। जो मांगो कहते हैं जो हुकुम। वहां तुम्हारी जैसे राजा(ई) थी। सामने कतलाम होते रहते थे। तुम्हारी कितनी सम्भल होती थी। अच्छा, आज भोग है। रूहानी ब(च्चों) को रूहानी बाप दादा का याद–प्यार गुडमॉर्निंग। नमस्ते।